



मिथ एंड फैक्ट

मिरगी

दूर करें गलतफहमी

भ्राति: मिरगी का मर्ज जादू-टोने या भूत-प्रेत के प्रकोप के कारण होता है...।

तथ्य: हालांकि शिक्षा के प्रसार-प्रचार के कारण अधिकतर लोगों को इसकी जानकारी है कि मिरगी का जादू-टोने या भूत-प्रेत से कोई संबंध नहीं है, लेकिन अभी भी गांवों और दूरदराज के क्षेत्रों में लोग इसे 'ऊपरी हवा' का असर मानकर रोगी को प्रताड़ित करते हैं। सच तो यह है कि मिरगी एक मेडिकल कंडीशन है। मस्तिष्क से संबंधित रोग है, जिसके कारण पीड़ित को दौरे पड़ते हैं।

भ्राति: यह एक संक्रामक रोग है।

तथ्य: मिरगी संक्रामक रोग नहीं है और यह रोगी व्यक्ति के संपर्क में आने से नहीं फैलता है। इस रोग से पीड़ित लोग सामान्य वैवाहिक जीवन जी सकते हैं, क्योंकि यह रोग शारीरिक संबंधों के द्वारा नहीं फैलता। इस रोग के मां से बच्चों में होने की आशंका भी केवल 5 प्रतिशत होती है।

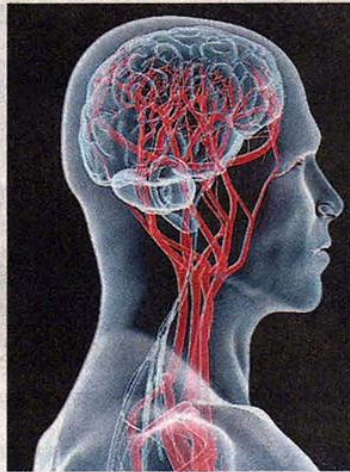
भ्राति: मिरगी एक जन्मजात रोग है। इसका कारण आनुवांशिक है।

तथ्य: किसी को किसी भी समय मिरगी रोग हो सकता है। कुछ लोग इस रोग के साथ जन्म लेते हैं, जबकि दूसरों को बचपन में या वयस्क होने पर पहला दौरा पड़ता है। हालांकि आनुवांशिकता इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन मिरगी के दूसरे प्रमुख कारण भी हैं। जैसे सिर में लगी गहरी चोट, ब्रेन ट्यूमर और स्ट्रोक आदि। अधिकतर मामलों (लगभग 65-70 प्रतिशत) में इस रोग के कारणों का पता नहीं है।

भ्राति: मिरगी से बुद्धिमत्ता प्रभावित होती है।

तथ्य: जिन लोगों को मिरगी होती है, उनका

आज भी देश में मिरगी (मिर्गी) के बारे में कई भ्रातियां व्याप्त हैं, जिनका तथ्यों की रोशनी में निराकरण जरूरी है...



आई.क्यू. लेवल भी उतना ही होता है, जितना सामान्य लोगों का होता है। हां इस रोग से पीड़ित लोगों को सीखने में परेशानी हो सकती है, अगर उन्हें बार-बार चक्कर आते हैं या इसके उपचार के लिए ली जाने वाली दवाओं से सुस्ती या थकान बढ़ती है।

भ्राति: मिरगी के मरीज सामान्य जीवन नहीं जी

सकते।

तथ्य: मिरगी की बीमारी आपको पढ़ाई और कार्यस्थल पर अच्छा प्रदर्शन करने से नहीं रोक सकती। इस रोग से पीड़ित लोग, शादी कर सकते हैं, अपना परिवार बढ़ा सकते हैं। मिरगी एक मेडिकल कंडीशन है, जिसका दवाओं और दूसरे उपायों के जरिये प्रबंधन करके सामान्य जीवन जिया जा सकता है। हां, ऐसे लोगों को ड्राइविंग और स्विमिंग से दूर रहना चाहिए।

भ्राति: मिरगी का दौरा पड़ना एक मेडिकल इमरजेंसी है और आपको तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

तथ्य: 90 फीसदी मिरगी के मामले मेडिकल इमरजेंसी से संबंधित नहीं होते हैं, लेकिन अगर दौरा पांच मिनट या उससे अधिक समय तक रहता है या एक के बाद एक लगातार दौरे पड़ते हैं और रोगी को दौरों के बीच में होश भी नहीं आता है या दौरा पड़ने के कारण पीड़ित गिर जाता है या जिसे दौरा पड़ा है वह डायबिटीज का रोगी या गर्भवती महिला है, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

भ्राति: जैसे ही किसी को मिरगी का दौरा पड़े तो तुरंत ही उसके मुंह में चम्मच या उंगली डाल देनी चाहिए या फिर उसे जूता सूँघना चाहिए।

तथ्य: यह मिथ्या अवधारणा है। जिस व्यक्ति को दौरा पड़ा है, अगर आप बलपूर्वक उसके मुंह में कुछ डालेंगे तो इससे उसके दांतों को नुकसान पहुंच सकता है, उसके मसूढ़े कट सकते हैं या उसके जबड़ों को नुकसान पहुंच सकता है। सही फर्स्ट एड यह है कि पीड़ित के सिर को किसी चीज से सहारा देकर थोड़ा ऊंचा करते हुए एक करवट लेटा दें, उसे चोटिल होने से बचाएं और इस बात का ध्यान रखें कि वह सामान्य रूप से सांस ले पाए। कुछ लोग दौरा पड़ने पर पीड़ित को जूता सुंघाते हैं, यह पूरी तरह गलत और निराधार उपाय है।

डॉ. अतुल प्रसाद डी.एम. (न्यूरोलॉजी)

बीएलके सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, नई दिल्ली

atulprasad2004@yahoo.com

इस मौसम में

दिमागी बुखार या मेनिनजाइटिस में मस्तिष्क की झिल्ली में सूजन आ जाती है। मांसपेशियों में दर्द, हाथों और पैरों का ठंडा होना, तेज बुखार, गर्दन में अकड़न, सिरदर्द, जी मिचलाना और उल्टी आना आदि

दिमागी बुखार से रहें सजग

इस रोग के कुछ प्रमुख लक्षण हैं। मौजूदा मौसम में इस बीमारी के मामले बढ़ जाते हैं।

उचित उपचार कराएं: इस बीमारी का निदान दिमाग के पानी की जांच, सी.टी. स्कैन, एम. आर.आई. आदि के जरिये किया जा सकता है। शरीर को पूरी तरह आराम दें। रोगी को अंधेरे व

शांत कमरे में रखें, शरीर के तापमान को कम करने के लिए बर्फ के टुकड़ों को कपड़े में लपेट कर शरीर की सिकाई करनी चाहिए। दिमागी बुखार का टीका लगवाएं। दवाएं डॉक्टर की सलाह से लें। मर्ज की स्थिति गंभीर होने पर रोगी को अस्पताल में भर्ती कराएं।